श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मनोसामाजिक समस्याएँ एवं उनके प्रभाव का अध्ययन

शिशिर चन्द्र राय,

परास्नातक–समाजकार्य विभाग,

डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोध सारांश

दिव्यांगता के कारण व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं सम्बन्धी भूमिकाओं को सामान्य व्यक्ति की तुलना में कम निभा पाता है। इस प्रकार दिव्यांगता व्यक्ति के भौतिक शारीरिक, मानसिक स्थितियों और उससे सम्बन्धित क्रियाकलापों से उत्पन्न एक प्रकार की सामाजिक स्वरूप की वह हानि है, जो किसी क्षति के उपरान्त व्यक्ति की आयु, लिंग एवं सामाजिक स्तर के अनुरूप कार्य करने में बाधा पहुँचाती है। अक्षमता के कारण यदि व्यक्ति का कार्य या शिक्षा प्रभावित होती है, तो वह दिव्यांगता कहलाती है। असमसर्थता के कारण अपनी आयु, लिंग व सामाजिक भागीदारी के सापेक्ष एक या एक से अधिक क्रियाओं को न कर पान में कठिनाई को दिव्यांगता कहते हैं। दिव्यांगता व्यक्ति की भौतिक, शारीरिक और मानसिक स्थितियों के साथ–साथ उससे सम्बन्धित क्रिया–कलापों से उत्पन्न एक प्रकार का सामाजिक स्वरूपता है। जिसका आकंलन व्यक्ति के मनो–सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है, जो स्थान, समय, परिस्थिति तथा सामाजिक भूमिका से भी सम्बन्धित हो सकती है। अर्थात् दिव्यांगता वह दशा है, जो क्षति एवं अक्षमता के कारण उत्पन्न शारिरिक एवं मानसिक क्रियाओं सम्बन्धी भूमिकाओं को सामान्य व्यक्तियों की तुलना में निर्वाह करने में बाधक होती है। अतः दिव्यांगता का सामाजिक स्वरूप वातावरण को परिलक्षित करता है।

Key words : *श्रवण बाधिता, दोष,कार्यात्मक क्षमता विद्यार्थी ,मनोसामाजिक समस्याएँ,प्रभाव,अध्ययन।*

श्रवण बाधिता का अर्थ सुनने में किसी प्रकार का दोष होना चाहे वह वंशानुगत के कारण या कान के किसी भाग के खराबी के कारण से हो अथवा वातावरणीय कारणों से भी हो सकता है। दूसरे शब्दों में जब कोई व्यक्ति या बाल सामान्य वातावरण में उपस्थित ध्वनि या आवाज को अपने कान के किसी अंग में खराबी के कारण सामान्य वातावरण की आवाजों को सुनने में असमर्थ होता है तो उसे हम श्रवण बाधित का नाम देते हैं।

इसके कारण बालक अपने श्रवण को सामान्य कार्य को नहीं कर पाता है यह उसे सामान्य बालकों द्वारा की जाने वाली क्रियाओं में उसकी श्रवण कार्यात्मक क्षमता को सीमित करती है।

इस प्रकार की बाधिता से पीड़ित बालक सामान्य रूप से हो रही बातचीत को सुन पाने में कठिनाई महसूस करते हैं। यदि इस प्रकार का दोष अधिक आयु में हो तो भाषा विकास पर ज़ोर नहीं पड़ता है। श्रवण बाधिता को विभिन्न विद्वानों एवं समितियों ने विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है।

किवृगली एवं क्रिश्मर (1982) के अनुसारः

''एक बधिर बच्चा या व्यक्ति वह है, जिसमें 91 dB या अधिक मात्रा में श्रवण क्षमता का संवेदी तंत्रिका का ह्रास हुआ हो।''

यूनेस्को की विशेषज्ञ कमेटी (1985):– श्रवण अक्षमता को परिभाषित करते हुए कहा कि ''बधिर बच्चों वैसे बच्चे होते हैं, जिसमें अत्यधिक श्रवण अक्षमता ह्रास के चलते स्वाभाविक वाणी और भाषा का विकास अत्यंत या पूर्णतः नहीं हुआ हो।''

पॉल और किवगली (1990) के अनुसार:–''श्रवण अक्षमता का मतलब श्रवण क्षमता में संयत (Moderate) और अत्यधिक (severe) हानि है।''

हैलॉहन एवं कॉकमैन (Hailehan and Kouphman) **के अनुसार:–**''वह बालक जिसमें जीवन के प्रारम्भिक दो एवं तीन वर्षों में श्रवण शक्ति की हानि हो रही है, और जिनसे इनके परिणाम स्वरूप स्वभाविक रूप से भाषा अर्जित न की हो वह बधिर समझा जाऐगा।''

आइडिया (IDEA) **1983 के अनुसार:–**''बधिर व्यक्ति उसे कहा जाता है, जिसकी श्रवण संवेदना गम्भीर रूप से क्षतिग्रस्त हो, तथा श्रवण यंत्र की सहायता या श्रवण यंत्र के बिना भाषायी सूचना को ग्रहण करने में अक्षम होता है।''

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) **के अनुसार:–**''मानव के उसके तरीके तथा विभिन्न प्रकार की क्रियाओं चाहे वह क्षतिग्रस्ता अथवा अक्षमता हो, उसके विभिन्न प्रकार की कमियों के आधार निर्धारण की जा सकती है।

आशा (ASHA) **1981 के अनुसार:–**''श्रवण क्षति अधिक गड़बड़ी के सामान्य श्रेणी से बाहर हो जाता है।''

विकलांग जन अधिनियम (P.W.D.Act) 1995 के अनुसार:– ''वह व्यकित श्रवण–बाधित कहा जायेगा जो 60 डेसिबल या उससे अधिक तीव्रता की ध्वनि पर सुनने की क्षमता रखता है।''

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (NSSO) 1991 के अनुसार:– ''श्रवण बाधित व्यक्ति उसे कहा जाता है जो सामान्य रूप से सामान्य ध्वनि को सुनने में अक्षम होता है।''

भारतीय पुनर्वास परिषद (RCI) 1992 के अनुसार:– ''जब बधिरता 70 डेसिबल हो तो व्यवसायिक तथा जब बधिरता 55 डेसिबल हो तो उसे शिक्षा के लिए प्रयोग में लाना चाहिए।

श्रवण बाधिता का वर्गीकरण एवं प्रकार

किसी भी समस्या का अध्ययन निदान एवं समाधान के लिए उसका वर्गीकरण करना आवश्यक होता है। श्रवण बाधिता को अच्छी तरह समझने के लिए इसे 5 भागों में वर्गीकृत किया गया है।

1. **क्षति ग्रस्तता के आधार पर** (Site of Lesion Hearing Loss)
2. **श्रवण कोटि के आधार पर** (Degree of Hearing Loss)
3. **भाषा विकास के आधार पर** (Language Development of Hearing Loss)
4. **प्रकृति के आधार पर** (Nature of Hearing Loss)
5. **उम्र के आधार पर** (Age of onset Hearing Loss)

1. क्षति ग्रस्तता के आधार पर (Site of Lesion Hearing Losss)

2. कान के बाह्य, मध्य एवं अन्तः भाग में किसी प्रकार की क्षति होने पर इसका वर्गीकरण निम्न भागों में किया गया है।

(i) **चालित श्रवण दोष** (Conductive Hearing Loss) – जब कान के बाह्य, मध्य अथवा दोनों भागों में

संरचनात्मक (बनावट) एवं कार्यात्मक (कार्य) रूप से कोई त्रुटि या विकार हो तो उसे चलित श्रवण दोष कहते हैं। ऑडियामेट्री के परीक्षण के आधार पर वायु चालकता के बीच अंतर बड़े पैमाने पर होता है।

इस प्रकार के दोष ने कर्ण नलिका में बाँधा, फोड़ा–फुन्सी कान का बहना, बाह्य कान में संक्रमण, पिन्ना का न होना, कान में मैल भरा होना, कर्ण पटल में छिद्र, कान में बाह्य वस्तु का जाना, अट्रेशिया (कान का पूरी तरह न होना) मध्य कान में संक्रमण (पानी या मवाद) हड्डियों का टूटना, सड़ना, गलना तथा मध्य कान में ट्यूमर इत्यादि कारण होते हैं।

(ii) संवेदी श्रवण दोष (Sensory Hearing Loss) – जब कान के विशेष रूप से अंतः भाग में उसकी बनावट अथवा कार्यात्मक रूप में विकार होने से संवेदी श्रवण दोष होता है। ऑडियोमेट्री के परीक्षण के आधार पर वायु चालकता तथा अस्थि चालकता दोनों असामान्य होते हैं तथा दोनों के बीच का अंतर 10 डेसिबल (dB) तथा उसे अधिक होता है।

इस प्रकार के दोष रूवेला अल्कोहल अत्यधिक दवाओं का सेवन, पीलिया का होना, समय से पहले बच्चे का जन्म होना, जन्म के समय बच्चे के सिर में चोट लगना, ऑक्सीजन की कमी इत्यादि कारण होते हैं।

(iii) मिश्रित श्रवण दोष (Mixed Hearing Loss) – जब कान के बाह्य मध्य एवं अंतः कर्ण में बनावट तथा कार्य में विसंगति के कारण होने वाल दोष श्रवण दोष होता है। ऑडियोमेट्री के परीक्षण के आधार पर इसमें भी वायु चालकता तथा अस्थि चालकता दोनों सामान्य होते हैं। तथा दोनों के बीच का अंतर 15 डेसिबल (dB) अथवा उससे अधिक होता है।

इस प्रकार के दोष में कर्ण पटल में छेद, संक्रमण, कान में मैल का होना, कान का ट्यूमर, पीलिया, अत्यधिक दवाओं का सेवन इत्यादि के कारण होता है।

(iv) केन्द्रीय श्रवण दोष (Central Hearing Loss) –जब अंतः कर्ण से ब्रेन स्टेम के द्वारा मस्तिष्क के अंदर तक सुनने के मार्ग में होने वाली क्षति केन्द्रीय श्रवण क्षति होती है। इस प्रकार के दोष में बालक आवाज को सुन सकता है परन्तु समझने के लिए पर्याप्त नहीं होती । इस प्रकार का दोष अधिगम अक्षम अथवा धीमी गति से सीखने वाले बच्चों में अधिक होता है। किसी चोट या संक्रमण के कारण व्यक्ति को मस्तिष्क का भाग प्रभावित होता है। इसमें व्यक्ति समझ सकता है परन्तु व्यक्त नहीं कर पाता है।

(v) कार्यात्मक श्रवण दोश (Functional Hearing Loss):–यह एक ऐसा दोष है जिसमें कान का कोई भाग न तो क्षतिग्रस्त होता है और नही उसकी बनावट में कोई असामान्यता होती है। बल्कि इसमें कोई अवांछनीय पदार्थ कान के अंदर जमा होने पर बधिरता आ जाती है। इसलिए इसे गैर कायिक (Non-organic) श्रवण दोष भी कहते हैं।

इस प्रकार के दोष में व्यक्ति मनोवैज्ञानिक रूप से ग्रसित होने के कारण सही रूप से सुन नहीं पाता है। वास्तव में देखा जाये तो सुनने की समस्या अल्पतम स्तर की होती है। परंतु उसे लगता है कि सुनने की समस्या गम्भीर प्रकृति की है।

श्रवण कोटि के आधार पर (Degree of Hearing Loss)

श्रवण बाधित बालकों के श्रवण ह्रास को हम डेसिबल (dB) में मापते हैं, जो श्रेणी को दर्शाता है कि यह किस श्रेणी का बालक है। इसकी कितनी डिग्री का ह्रास है।

(i) **0 – 25** dB **सामान्य** (Normal) – इस प्रकार के श्रवण दोष में व्यक्ति/बच्चे की श्रवण शक्ति सामान्य होती है, एवं किसी प्रकार की आवाज को सुनने में कोई कठिनाई नहीं होती है। इसमें छोटे बच्चे भी आसानी से वाणी एवं भाषा का विकास कर लेते हैं।

(ii) **26 – 40** dB **अतिअल्प** (Mild) – इस प्रकार के श्रवण दोष में व्यक्ति/बच्चे किसी भी आवाज को सामान्य की तरह सुन सकता है, परंतु कभी–कभी धीमी व पतली आवाज़ों को सुनने में परेशानी होती है। ऐसे बच्चों को वाणी वाचन कराकर वाणी एवं भाषा सिखाया जा सकता है और छोट बच्चे वाणी एवं भाषा आसानी से सीख लेते हैं।

(iii) **41 – 55** dB **अल्प** (Moderate) – इस प्रकार के श्रवण दोष में व्यक्ति/बच्चे को सुनने में कुछ ज्यादा कठिनाई होती है। वह किसी बड़े हाल में बैठा हो या एक साथ चार–पांच लोगों की आवाज के बीच किसी की आवाज सुनने में दिक्कत होती है। इसमें छोटे बच्चे की वाणी एवं भाषा का विकास अवश्य ही पीछे छूट जाता है, इसलिए उसका विशेष ध्यान देना पड़ता है।

(iv) **56 – 70** dB **अल्पतम** (Moderately Severe) – इस प्रकार के श्रवण दोष में व्यक्ति/बच्चा बिना श्रवण यंत्र के आसानी नहीं सुन सकता है। छोटे बच्चों में शुरू में श्रवण यंत्र लगाना ज़रूरी हो जाता है तभी वाणी एवं भाषा का विकास सम्भव हो पाता है। इसके साथ–साथ बच्चे की बेहतर वाणी एवं भाषा विकास के लिए विशेष वाणी चिकित्सा एवं विशेष विद्यालय की मदद ली जा सकती है।

(v) **71 – 90** dB **अल्प** (Severe) – इस प्रकार के श्रवण दोष में व्यक्ति/बच्चे पूरी तरह श्रवण यंत्र पर आश्रित होते हैं, बिना श्रवण यंत्र के उसे किसी प्रकार की सामान्य आवाज सुनाई नहीं देती है। छोटे बच्चे पूरी तरह से श्रवण यंत्र पर आश्रित होते हैं। इसलिए उनकी वाणी एवं भाषा का विकास पूरी तरह से श्रवण यंत्र पर आश्रित होता है।

(vi) **90** dB **से ऊपर अति गम्भीर** (Profound) – इस प्रकार के श्रवण दोष में बच्चे एवं व्यक्ति के लिए श्रवण यंत्र ही मात्र उपाये है। इसकी के द्वारा ही शाब्दिक भाषा का सम्प्रेषण हो सकता है।

भाषा विकास के आधार पर (Language Development of Hearing Loss)

भाषा विकास के आधार पर श्रवण दोष को 2 प्रकार से विभाजित किया गया है।

(i) **भाषा विकास पूर्व श्रवण दोष** (Pre-Lingual of Hearing Loss) – इस प्रकार के श्रवण दोष में बच्चे के वाणी एवं भाषा विकास की आयु से पूर्व दोष उत्पन्न होता है। उसे भाषा विकास पूर्व श्रवण दोष कहते हैं।

(ii) **पश्च भाषा विकास श्रवण दोष** (Post-Lingual of Hearing Loss) – इस प्रकार के दोष बच्चे में जब वाणी एवं भाषा विकास पूरी तरह हो जाने के बाद होता है। उसे पश्च भाषा विकास श्रवण कहते हैं।

प्रकृति के आधार पर (Nature of Hearing Loss)

श्रवण बाधिता को प्रकृति के आधार पर मुख्य रूप से दो प्रकार के श्रवण दोष पाये जाते हैं।

(i) **अचानक श्रवण दोष** (Sudden Hearing Loss) – यदि किसी व्यक्ति में किसी कारणवश सुनने की क्षमता में अचानक कमी हो जाये तो उसे अचानक श्रवण दोष कहते हैं। इस प्रकार का दोष मुख्य रूप से चोट, दुर्घटना, बीमारी, आघात, अत्यधिक औषधि का सेवन तथा अचानक तीव्र गति की आवाज के कारण होता है।

(ii) मंद गति से होने वाल श्रवण दोष (Gradual Hearing Loss) – यदि किसी व्यक्ति में किसी कारणवश सुनने की प्रक्रिया धीरे–धीरे कम हो जाये तो उसे मंद गति से होने वाला श्रवण दोष कहते हैं। यह दोष विशेष रूप से कान के संक्रमण तथा वंशानुगत बीमारी के कारण होता है।

मनोसामाजिक समस्या

समायोजन प्रत्येक मनुष्य के जीवन से जुड़ा हुआ महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्त्य है। एक साधारण मजदूर से लेकर एक विशिष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति सभी के लिए अच्छा समायोजन होना जरूरी होता है।

(i) **अविश्वास** – सामान्य व्यक्तियों की भाँति श्रवण बाधिरों में अपनी विकलांगता के कारण अविश्वास की उत्पत्ति हो जाती है तथा इसी कारण उनकी कई प्रकार की मनोसामाजिक समस्या उत्पन्न होती है।

(ii) **शर्म** – समाज में सामान्य व्यक्तियों की तुलना में इन लोगों की क्रियाशीलता परिपक्व नहीं होती है जिस कारण इन्हें शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ता है। यह इनकी मनोदशा को प्रभावित करता है।

(iii) **हीन भावना** – श्रवण बाधिरों में हीन भावना विधमान होती है क्योंकि कहीं न कहीं ये सामान्य व्यक्तियों से दूरी बनाकर रखते है तथा श्रवण बाधित समाज में रहना प्रसन्द करते है क्योकि सामान्य व्यक्तियों के साथ समायोजन में कठिनाईयों के साथ हीन भावना भी उत्पन्न होती है।

(iv) **अलगाव** – श्रवण बाधित को अपने समुदाय के लोगों से अधिक लगाव होता है तथा सामान्य लोगों से स्वयं को अलग रखते हैं। समप्रेषण न हो पाना भी श्रवण बाधितों के सामान्य व्यक्तियों से अलगाव का मुख्य कारण है।

(v) **निराशा** – श्रवण बधितों में निराशा का उत्पन्न होना सामान्य है वे अधिक समय निराशा में ही व्यतीत करते है क्योंकि समाज के अन्य कारक उन्हें उनकी विकलांगता का जाने–अन्जाने मे ही महसूस करवाते है जिससें उन्हें इस कारण निराशा का सामना करना पड़ता है।

उपरोक्त सभी समस्याओं के कारण श्रवण बधिरतों में यह सभी मनोसामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होती है जिस कारण समाज में समायोजन नहीं हो पाता है।

श्रवण बाधितों की मुख्य मनोसामाजिक समस्या समाज में स्वंय को समायोजित करना है।

अतः अध्ययनों से यह पता लगाया जा सकता है कि सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा समायोजन श्रवण बाधितों की मुख्य मनोसामाजिक समस्या है।

श्रवण बाधित विद्यार्थी अपनी विकलांगता के कारण समाज में सामाजिक समायोजन सम्प्रेषण करने, सांकेतिक भाषा में बातचीत करने तथा मनोरंजन करने के लिए सामान्य अन्य विद्यार्थियों के साथ सामन्जस्य बनाने में उपरोक्त समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण कई बार श्रवण बाधित बच्चें स्वंय को समाज की मुख्य धारा से अलग समझने लगते है तथा उनमे कुसमायोजन की समस्या उत्पन्न होने लगती है।

अतः यह मानवीय एवं सामाजिक दायित्व है कि ऐसे बच्चों को समुचित सुविधाएं उपलब्ध कराने एवं सामाजिक वातावरण में सहज जीवन हेतु प्रेरित किया जाये जिससे इस विशाल जनशक्ति का समुचित उपयोग राष्ट्रहित में हो सके।

समायोजन की परिभाषाएं

आक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी के अनुसार: –''समायोजन का मतलब विसंगतियों के अनुरूप करने के लिए मानक या उद्देश्य के अनुरूप करने के लिए बाहर की व्यवस्था है।''

विलीयम क्लर्क (1970) के अनुसार: –''समायोजन पर्यावरण के साथ एक सामन्जस्यपूर्ण सम्बन्ध है जिसमें सबसे अधिक व्यक्तिगत आवश्यकताओं को सामाजिक रूप से स्वीकार तरीके से सन्तुष्ट किया है। परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले व्यवहार को सूचित किया जा सकता है जो निष्क्रिया अनुरूपता से जोरदार कारवाई करने के लिए हो सकता है।

साइमण्ड (1949) ने लिखा था कि :–''समायोजन को अपने पर्यावरण के लिए जीव के संतोषजनक सम्बन्ध के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।''

अध्ययन की आवश्यकता

सामान्यतः देखा जाता है कि सामान्य विद्यार्थियों का वाणी एवं भाषा का विकास होने के कारण उनका सामाजिक समायोजन एक–दूसरे से बातचीत करना, पढ़ना, लिखना, मनोरंजन करना आदि आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है। अपने दैनिक जीवन की क्रियाओं को करने में सामन्जस्य स्थापित कर लते हैं तथा परिवार, समाज एवं सहपाठियों से भी सामन्जस्य स्थापित कर लेते हैं। लंकिन विकलांगजनों का जीवन सामान्यतः बहुत ही कठिन होता है क्यांकि इनमें वैयक्तिक विभिन्नता पाई जाती है। विकलांगजनों की विभिन्नता इस हद तक हो जाती है जिसकी कारण वह सामान्य जीवनशैली का सामना नहीं कर पाते हैं।

सामान्य विद्यार्थी की तरह ही श्रवण बाधितो की भी मनोसामाजिक समस्याएँ होती हैं। श्रवण बाधितों की मुख्य समस्या समाज में समायोजन स्थापित करना है। श्रवण बाधितों को भी सामान्य व्यक्तियों की तरह समायोजन करने की आवश्यकता होती है जिसकी पूर्ति के लिए वह सामाजिक वातावरण में परस्पर अन्तःक्रिया करता है। इस अन्तःक्रिया के दौरान श्रवण बाधित अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है।

श्रवण बाधितों का वाणी एवं भाषा का विकास न होने के कारण उन्हें विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। श्रवण बाधितों को सामाजिक मेल–जोल, सामान्य व्यक्तियों के साथ सम्प्रेषण करना, मनोरंजन करना तथा परिवार, मित्रों एवं समाज से बातचीत करना इत्यादि क्रियाएँ बाधित होती हैं।

श्रवण बाधितों को अपनी विकलांगता के कारण समाज में समायोजन न स्थाापित कर पाने के कारण अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिससे कई बार श्रवण बाधित स्वयं को समाज की मुख्य धारा से अलग समझने लगते हैं तथा इस स्थिति में कुसमायोजन की समस्या उत्पन्न होती है।

श्रवण बाधितों को समाज में समायोजन करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिससे विभिन्न प्रकर की मनोसामाजिक समस्याओं का जन्म होता है। श्रवण बाधितों में सुनने की समस्या होने के साथ वाणी तथा मौखिक भाषा की समस्या या दोष भी दिखाई देता है। प्रायः श्रवण बाधित व्यक्ति अपनी भावनाओं और सूचनाओं को अभिव्यक्ति करने में कठिनाई महसूस करते हैं। श्रवण बाधितों की मनोसामाजिक समस्याएँ निम्नलिखित हैं–

i. श्रवण बाधित समाज में समायोजन स्थापित करने में असफ़ल रहते हैं।
ii. स्वयं की विकलांगता के कारण निराशा उत्पन्न होती है।

iii. प्रतिभा होने के बावजूद अविश्वास के कारण असफ़ल होते हैं।

iv. श्रवण बाधितों में अपनी विकलांगता के कारण हीन भावना विद्यमान रहती है।

v. श्रवण बाधितों में सामान्य चिन्ता नहीं होती है।

vi. अधिकतर श्रवण बाधित स्वयं की विकलांगता का कारण स्वयं को मानकर अवसाद के शिकार होते हैं।

vii. कुसमायोजन के कारण कई प्रकार की मानसिक बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं।

viii. श्रवण बाधित उनकी विकलांगता के कारण सामाजिक क्रिया–कलापों में पिछड़ जाते हैं जिसके कारण गुस्सा, कुण्ठा व अपराध–बोध इत्यादि उत्पन्न होता है।

ix. श्रवण बाधित सामान्य लोगों के साथ मेल–जोल नहीं बढ़ा पाते हैं जिससे जीवन के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति उत्पन्न होती है।

श्रवण बाधित विद्यार्थियों को सामाजिक तालमेल बनाने में बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें श्रवण व्यक्तियों के साथ बातचीत करने में समस्या होती है जिसके कारण अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं। श्रवण बाधितों को समाज के, परिवार के व विद्यालय के विभिन्न क्रियाकलापों में भाग लेने में समस्या होती है। मौखिक निर्देशों में समस्या के कारण उनको मनोसामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अतः यह मानवीय एवं सामाजिक दायित्व है कि ऐसे श्रवण बाधित व्यक्तियों को समाज व राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ा जाये तथा इनकी मनोदशा को गम्भीरता से लिया जाये जिससे इन्हें किसी मनोसामाजिक समस्या के कारण मानसिक विकृतियों से बचाया जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, रजनी रंजन (2012) शिक्षा में अनुसंधान विधियां एवं सांख्यिकी उत्तरायण प्रकाशन हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)।
2. सिंह, ए0के0 (2015) मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।
3. गुप्ता, एस0पी0 (2015) आधुनिक मान एवं मुल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
4. पाल सीतारा एवं भोला वी0 (2013) संगम श्रवण एवं वाणी प्रबन्धन, नवीन प्रकाशन, अहमदाबाद।
5. जोसेफ, आर0ए0 (2011) विशेश शिक्षा एवं पुनर्वास, समाकलन पब्लिशर्स, करौंदी, बी0एच0यू0, वाराणसी।
6. जोसेफ आर0ए0 (2013) पुनर्वास के आयाम, समाकलन पब्लिशर्स, करौंदी, बी0एच0यू0, वाराणसी।
7. कुमर, संजीव (2008) विशिश्ट शिक्षा, नई दिल्ली।
8. Hatamizadeh N. Ghasemi M. Saudi A. (2008) Perceived Copetence and School Adjustment of Hearing Impaired Childred in Mainstream Primary School Setting. Department of Rehabilitation Management University of Scoail Welfare and Rehabilitation Seuiness, Tehran Vol. 34(6), pp.94-789
9. Aplin D. Yvonne (2006) Social and Emotional Adjustment of Hearing Imapired in ordinary and Speical Schools. Vol. 29, pp.56-64.

10. Arnold Paul & Atakins Jean (2006) The Social and Emotional Adjutement of Hearing Impaired Children Integrated in Primary Scoools, Vol. 33, pp.223-228.
11. Erik Adnderson G., Rydell M. & Larser H.C. (2009) Social Competence and Rehavioural Problem in Children with Hearing Impairment, Vol. 39
12. Shivangi (2006) School Effects on Psychological Outcome during Adolescence Unviersity, Journal of Education Psychology, Vol. 94(4), pp. 120-123
13. Chopra R. And Kalita R. (2006) Adjustment Problems of Elementary School children of Single Parental and Intact Parent Families. Indian Education Abstracts, Vol. pp.36-40.
14. sharma Sumit (2003) A Study of Emotional Social and Educational Adjustment of High School Students in Relation to their Sex Types of School, M.jjPhil Dissertation Shimla, Himachal Pradesh Unviersity.
15. Gordia Alok and Shandilya Shweta (2010) An Empirical Enquiry towards relationship of Adjsutement Sense of responsibility and scientific Attitude among Adolescents. Gyan the Journal of Education July-December 2010 Vol. 7 No.1, pp.36-40.
16. Heword William L. & Orlenceki Mycle D. (1981) Expectation Children.
17. Ritika (2004) A comparative study of school Adjustment Problems of High School students in Relation residential Background and socio-economic status. M.Ed. published dissertation in education Himachal Pradesh University, Shimla.

Copyright © 2018, Shishir Chandra Rai. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.